बूंद बूंद से सागर

साखरपुर गांव में ज्यादातर औरतें काम करती थीं। चाहे खेत-मज़दूरी का, चाहे सब्जी बेचने का, पत्थर तोड़ने का या बीड़ी बनाने का, सभी काम में औरतें लगी थीं। और गांव में मर्द शराब पीते थे। सरकारी शराब का ठेका जो खुल गया था गांव में। जो कुछ भी वह कमाते उसे दारू में उड़ा देते। घर-परिवार, बच्चों की ज़िम्मेदारी आ पड़ी औरतों के कंधे पर। उसे पूरा करने की कोशिश करती रहीं औरतें। पर मर्द को शराब के लिए पैसे चाहिए थे। मारपीट करते, गाली गलौज करते और छीन ले जाते। पर ऐसा कब तक चलता। कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही था।

मेहनत की कमाई छिनी

भूरी बाई के घर में भी कुछ ऐसा ही हो रहा था। उसका पति देवाजी गांव के अस्पताल में चपरासी था। उसकी हर महीने की कमाई शराब में खर्च हो जाती थी। घर का गुजारा भूरी बाई पत्थर तोड़कर चलाती थी। भूरी बाई के एक लड़की थी। वह उसे अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहती थी। पढ़ी होगी तो अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी। उसकी जिंदगी बेहतर होगी। पर देवाजी से चोरी-छुपे पैसे कहां रखे। कभी आटे के डिब्बे में, कभी दाल के कनस्तर में। पर देवाजी मार-पीट, लड़-झगड़ कर यह भी ले जाता।

तंग आकर भूरी बाई अपने घर के पिछवाड़े में पैसा गाड़ कर रखने लगी। उसकी बेटी ने देखा तो पूछने लगी। यह क्या कर रही हो? भूरी बाई ने समझाया, यह तेरी पढ़ाई के लिए जोड़ रही हूं। तू स्कूल जाएगी तो ये काम आएंगे। हमारे दिन फिर जाएंगे। पर कुछ दिन बाद देवाजी ने काम से थक कर लौटी भूरी बाई से पैसे मांगे। इंकार करने पर उसे बहुत पीटा। बोला, बता सारे पैसे कहां जाते हैं। भूरी बाई ने कहा, आजकल कम मज़दूरी मिल रही है।

दूर खड़ी बेटी से मां की यह हालत देखी नहीं गई। उसने बापू से कह दिया, मां ने पैसे कहां छुपाए हैं, मैं बताती हूं। तुम मां को मत मारो। बेटी के बताते ही देवाजी खुश हो गया। गड्ढा खोदकर सारे रुपए निकाल कर ले गया, भूरी बाई बहुत दुखी हुई। मन में बार-बार विचार आ रहा था, पैसे कैसे बचांऊ? पैसा होगा तभी तो अपनी बेटी को पढ़ांऊगी।

नई जानकारी

दूसरे दिन काम पर भूरी का मन नहीं लगा। उसके साथ काम करने वाली कजरी बाई ने उससे पूछा कि आखिर बात क्या है। तब भूरी बाई ने उसे अपनी सारी बात बताई। कजरी ने उसे हिम्मत बंधाई और बोली, "अब तो हम जैसी औरतों के लिए सरकार ने एक योजना चलाई है। इसमें हम डाकघर में चार रुपए से ही बचत शुरु कर सकते

हैं। फिर हर बार जो भी बचे हम जमा कर सकते हैं। मैंने भी अपना खाता खुलवाया है। अब मुझे कोई परेशानी नहीं है।" फिर कजरी भूरी बाई को पास के डाकघर ले गई। डाकघर के बाबूजी ने बताया यह 'महिला समृद्धि योजना' है। कोई भी अठारह साल की औरत, अपने गांव के डाकघर में चार रुपए से खाता खोल सकती है। खाते में ज्यादा से ज्यादा तीन सौ रुपए जमा कराए जा सकते हैं। साल में दो बार आप पैसे निकाल सकती हैं। यह राशि बीस रुपए से कम नहीं होनी चाहिए। जमा होने से एक साल बाद आपको पच्चीस प्रतिशत बोनस मिलेगा। मतलब कि तीन सौ रुपए पर पचहत्तर रुपए सरकार देगी। खाता खोलते समय औरत को पोस्ट आफिस से पासबुक मिलेगी जिसमें खाता नम्बर, नाम, डाकघर का नाम आदि लिखा जाएगा। आप जब चाहें खाता बंद कर सकती हैं।

भूरी बाई ने खाता खोला

भूरी बाई यह सुनकर बड़ी खुश हुई। उसने उसी दिन डाकघर में खाता खुलवाया। अब उसकी रोज़ की परेशानी खत्म हो गई। देवाजी रोज मारपीट करके पैसे के बारे में पूछता और घर भर में पैसा ढूंढता रहता। इसी तरह साल भर बीत गया। भूरी बाई को अपने सपने सच होते दिखाई दिए। लेकिन एक दिन शराब के नशे में धुत देवाजी नाले में गिर गया। उसके पैर की हड्डी टूट गई।

डाक्टर साहब ने देवाजी के पैर में पलस्तर चढ़ा दिया। साथ ही दवाइयां भी लिख दीं। देवाजी परेशान कि अब इतना पैसा कहां से आएगा। पर भूरी बाई सीधी डाकघर गई। डाक बाबू ने उसके खाते में जमा तीन सौ रुपए उसे दिए। साथ ही ब्याज के पचहत्तर रुपए भी। इस पैसे से भूरी बाई दवाई खरीद लाई। देवाजी को हैरानी हुई तो उसने भूरी बाई से पूछा कि दवा के लिए इतना रुपया कहां से आया।

बचत योजनाएं

बड़ी सहजता से भूरी बाई ने कहा कि तुमसे छिपाकर जो पैसा जमा किया था, उसी से तुम्हारा इलाज हो पाया है। सुनकर देवाजी को अपनी गलती का अहसास हुआ। साथ ही बचत का महत्व भी समझ में आया। कुछ दिन बाद पैर ठीक होने पर देवाजी डाकघर गए और डाकबाबू से बचत योजनाओं के बारे में जानकारी ली। डाकबाबू ने बताया कि :

- **राष्ट्रीय बचत पत्र**

राष्ट्रीय बचत पत्र रुपए सौ, पांच सौ, एक हजार पांच और दस हजार के मूल्य के डाकघर से खरीदे जा सकते हैं। इसमें रकम जमा कराने वाले को छः साल बाद जमा की गई रकम से दुगनी राशि मिलती है।

- **डाकघर मासिक आय योजना**

कम से कम छः हजार रुपए जमा कराने से

हर महीने तेरह प्रतिशत ब्याज प्राप्त किया जा सकता है। छः साल बाद दस प्रतिशत बोनस के साथ रकम वापस मिलती है।

- **राष्ट्रीय बचत योजना 1992**

इस योजना में कम से कम सौ रुपए जमा कराए जा सकते हैं। ब्याज की दर ग्यारह प्रतिशत है। हर साल के लिए अलग खाता खुलवाना पड़ता है। हर साल ब्याज निकालने की भी सुविधा है।

- **लोक भविष्य निधि**

इसमें एक साल में अधिक से अधिक 60,000 रुपए तक जमा किए जा सकते हैं। तथा 12 प्रतिशत की दर से चक्रवृद्धि ब्याज दिया जाता है।

- **डाकघर बचत बैंक खाता**

इस योजना में खाता खुलवा कर जमा की गई रकम पर 5.5 प्रतिशत की दर से ब्याज पा सकती हैं। जब भी आप चाहें रकम जमा कर सकती हैं और निकाल सकती हैं।

- **डाकघर आवृति जमा खाता**

कम से कम दस रुपए हर महीने जमा करके यह खाता पांच साल के लिए खोला जाता है। पांच साल में 600 रु. जमा होकर 833 रु. 40 पैसे मिलते हैं। खाते में 12½ प्रतिशत ब्याज दिया जाता है। छोटी-छोटी बचत से पांच साल बाद बड़ी राशि मिलती है। पचास रुपए के खाते तक मुफ्त में बीमा का लाभ मिलता है। यानि 18 साल से 53 साल तक के खातेदार की चौबीस किश्तें जमा कराने के बाद अगर मौत हो जाती है तो उसके खाते का परिपक्व मूल्य मिलता है। एक व्यक्ति एक से अधिक खाता भी खुलवा सकता

है। एक साल बाद जमा रकम की आधी कर्ज के रूप में भी ली जा सकती है। एक साल बाद खाता बंद भी किया जा सकता है।

इन सभी योजनाओं के बारे में जानकर देवाजी बहुत खुश हुआ। उन्होंने भी अपना खाता खोला और तय किया कि वे अब शराब नहीं पीएंगे बल्कि पैसे जोड़कर अपनी बेटी को खूब पढ़ाएंगे और उसे अपने पैरों पर खड़ा होने का मौका देंगे। □